

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट साहित्य, व्याख्यान 4, यहूदी धर्म और सामाजिक मूल्य

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह यहूदी धर्म और सामाजिक मूल्यों पर डॉ. डेविड मैथ्यूसन के न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में व्याख्यान 4 है।

डॉ. मैथ्यूसन. आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें। और फिर हम इस सप्ताह और संभवतः अगले सप्ताह, नए नियम के दस्तावेजों को देखने की तैयारी में पृष्ठभूमि और वातावरण को देख रहे हैं। हम राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक और आज, सांस्कृतिक रूप से एक बहुत व्यापक तस्वीर खींचने की कोशिश कर रहे हैं, जो आगे बढ़ रही थी और विशेष रूप से उस समय अवधि पर ध्यान केंद्रित कर रही थी जिसमें नया नियम स्थापित करने के लिए लिखा गया था। नया नियम क्यों लिखा गया इसकी पृष्ठभूमि और अग्रभूमि। फिर से, यह महसूस करते हुए कि नया नियम बहुत विशिष्ट ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर विकसित हुआ है, उनका जवाब देना, उनकी आलोचना करना आदि।

हमने हाल ही में मुख्य रूप से धार्मिक पृष्ठभूमि पर ध्यान केंद्रित किया और हमने देखा कि ग्रीक दुनिया में ग्रीको-रोमन और रोमन दुनिया में जो अब प्रमुख साम्राज्य था और यहूदी दुनिया में भी विभिन्न धार्मिक विकल्प और प्रभाव उपलब्ध थे। लेकिन हमने यह भी देखा कि धर्म और राजनीति में आसानी से अंतर नहीं किया जा सकता। यह विशेष रूप से ग्रीको-रोमन दुनिया में सच था कि रोम के प्रति वफादारी के साथ-साथ धार्मिक निहितार्थ भी थे।

तो, आपके पास धर्म और राजनीति के बीच वह सख्त विभाजन नहीं था जिसके बारे में हम अक्सर सोचने के लिए इच्छुक हो सकते हैं। इसलिए आज मैं इसे समाप्त करना चाहता हूँ और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में भी थोड़ा ध्यान देना शुरू करना चाहता हूँ। कुछ प्रमुख रुझान क्या थे? फिर से, बहुत व्यापक स्ट्रोक्स को चित्रित करते हुए, सामाजिक रूप से कुछ प्रमुख रुझान क्या थे, कुछ सामाजिक मूल्य जो लोगों के एक-दूसरे से संबंधित होने के तरीके को नियंत्रित करते हैं, और जिस तरह से लोग रहते थे और सोचते थे उसका उन कुछ चीजों पर प्रभाव पड़ता था जिन्हें हम पढ़ते हैं। नया नियम? फिर मैं आपको नए नियम के पाठ के कुछ उदाहरण भी देना चाहता हूँ जहां ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने से हमारे वास्तव में इसे पढ़ने के तरीके में थोड़ा अंतर आ सकता है।

लेकिन आइए पहले प्रार्थना से शुरुआत करें। पिता, फिर से, हम यह समझने के प्रयास की विशालता के प्रति सचेत हैं कि हमारे लिए आपके शब्द और रहस्योद्घाटन से कम कुछ भी नहीं है। इसलिए, हम आपसे इसके बारे में स्पष्ट रूप से सोचने, हम जो कुछ भी हैं और जो कुछ भी हमारे पास है उसे लाने और आपके रहस्योद्घाटन को हमारे सामने समझने की कोशिश करने के कार्य के लिए हमारी सर्वोत्तम सोच को सक्षम करने के लिए कहते हैं, न केवल पहली शताब्दी में आपके लोगों के लिए बल्कि आप आज भी अपने लोगों से अपनी बात कैसे कहते रहते हैं। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं, आमीन।

ठीक है, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर ध्यान केंद्रित करने से पहले मैं एक बात करना चाहता हूँ, आप यहूदी धार्मिक स्लैश दार्शनिक स्लैश राजनीतिक विकल्पों की हमारी चर्चा के बाद अपने नोट्स में एक अनुभाग देखेंगे। मैं बहुत कुछ कह रहा हूँ, इस वजह से, बहुत से विद्वान अक्सर यहूदी धर्म के बारे में बात करने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

अर्थात्, यहूदी धर्म के भीतर विभिन्न प्रकार के या कम से कम कुछ दलों के आंदोलन प्रतीत होते हैं, ऐसा नहीं है कि हर किसी को उनमें से एक से संबंधित होना पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ एक सामान्य यहूदी धर्म था, लेकिन उसके भीतर कई पार्टियाँ थीं। लेकिन उससे संबंधित मेरे पास आपके नोट्स में यहूदी धर्म का साहित्य नामक एक अनुभाग है।

और मैं यह सब नहीं देखना चाहता। मैं बस इनमें से दो या तीन को छूना चाहता हूँ जिनसे आप परिचित हो सकते हैं या पढ़ते समय आपका सामना हो सकता है, ताकि आप समझ सकें। जब मैं बड़ा हो रहा था, तो मैं सोचता था कि न्यू टेस्टामेंट ही एकमात्र पुस्तक है जो पहली शताब्दी में लिखी गई थी।

लेकिन वास्तव में, न्यू टेस्टामेंट साहित्य के संपूर्ण समूह का एक हिस्सा है जो न्यू टेस्टामेंट के समय के दौरान और उसके बाद भी विकसित हुआ। और यह अक्सर हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि लोग क्या सोच रहे थे या उन्होंने परमेश्वर के वादे की व्याख्या कैसे की, उन्होंने कैसे समझा कि यहूदी होने या परमेश्वर के लोग होने का क्या मतलब है। और यह अक्सर इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि हम नए नियम को कैसे पढ़ते हैं और नए नियम के लेखक क्या सोच रहे होंगे, क्या कर रहे होंगे या क्या प्रतिक्रिया दे रहे होंगे।

मैं इनमें से केवल तीन पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। यहूदी धर्म के इस साहित्य में पहला नंबर दो पर है, और इसे मिशनाह के नाम से जाना जाता है। जैसा कि किवदंती है, इसके साथ ही, आपको अब पुराने नियम में वापस जाना होगा, साथ ही उस कानून के साथ जो मूसा को दिया गया था, आपको याद है, विशेष रूप से एक्सोडस, लेविटस और ड्यूटेरोनॉमी की किताबें मोज़ेक कानून का वर्णन करती हैं, वह व्यवस्था जो परमेश्वर ने मूसा को दी।

लिखित कानून के साथ-साथ, जैसा कि किवदंती है, एक मौखिक परंपरा या मौखिक कानून भी था जो मूसा को दिया गया था। लेकिन जो बात मैं लिखित कानून के साथ कहना चाहता हूँ, वह यह है कि मौखिक आदेशों और मौखिक कानून और मौखिक परंपरा का एक समूह विकसित हुआ जो लिखित रूप के बजाय मौखिक रूप से पारित किया गया था। लेकिन लगभग 200 ईस्वी में, इसलिए यह न्यू टेस्टामेंट लिखने की अवधि के लगभग 150 से 100 साल बाद है, लगभग 200 ईस्वी में, मौखिक साहित्य के इस समूह को तब लिखा गया था और मिश्रा के नाम से जाने जाने वाले दस्तावेज़ में लिखित रूप में संहिताबद्ध किया गया था।

आप हमारी लाइब्रेरी में मिशनाह, इसका अंग्रेजी अनुवाद पा सकते हैं। लेकिन हालाँकि यह आता है, आपको आश्चर्य हो सकता है कि हम ऐसे दस्तावेज़ के बारे में क्यों बात कर रहे हैं जो न्यू टेस्टामेंट से सौ साल या उससे अधिक बाद का है। क्योंकि इसमें वह जानकारी शामिल थी जो

मौखिक रूप से दी गई थी, यह अक्सर प्रतिबिंबित कर सकता है कि यहूदी और अन्य लोग पहली शताब्दी में ही विभिन्न मुद्दों के बारे में कैसे सोच रहे थे, भले ही इसे लगभग 200 ईस्वी में संहिताबद्ध और लिखा गया था।

तो मिशनाह यही है। मूसा को दिए गए लिखित कानून के साथ-साथ, मौखिक कानून की एक परंपरा थी जो इसके आसपास विकसित हुई, और वह मौखिक कानून अंततः इस दस्तावेज़ में लिखने के लिए प्रतिबद्ध था जिसे हम मिशनाह के रूप में जानते हैं। लेखन का एक और टुकड़ा जिसके बारे में आपको जानना आवश्यक है, वह पिछले वाले के बाद अगला है, टारगम्स।

टारगम्स मूल रूप से इसी तरह उत्पन्न हुए। फ़िलिस्तीन की भूमि में, अरामी भाषा के रूप में, आपको उम्मीद है कि पुराने नियम से याद होगा कि पुराना नियम मुख्य रूप से किस भाषा में लिखा गया था? पुराने नियम के कुछ छोटे खंडों को छोड़कर, जो अरामी भाषा में लिखे गए थे, हर कोई हिब्रू जानता है। पुराना नियम हिब्रू में लिखा गया था।

हालाँकि, जब फ़िलिस्तीन में लोग अरामी भाषा बोलने लगे, तो इसकी ज़रूरत थी, खासकर जब वे पूजा के लिए अपने आराधनालयों में मिलते थे, चूँकि बाइबल पढ़ी जाती थी, समझाई जाती थी और व्याख्या की जाती थी, इसलिए उनकी भाषा में ऐसा करने की ज़रूरत थी, भाषा अरैमिक का। आखिरकार, इन अरामी अनुवादों और व्याख्याओं को भी संहिताबद्ध किया गया और लिखा गया। हालाँकि सबसे पहले उन्होंने उपदेशों और मौखिक प्रस्तुतियों के रूप अपनाए, वे भी उन रूपों में लिखने के लिए प्रतिबद्ध थे जिन्हें अब हम टारगम्स के रूप में जानते हैं।

फिर, वे नए नियम के कुछ सौ साल बाद आए, लेकिन वे अभी भी पहली शताब्दी में यहूदियों ने क्या सोचा था और उन्होंने पुराने नियम की व्याख्या और समझ कैसे की थी, उसे मूर्त रूप दे सकते हैं। तो, मिश्रा, फिर से मौखिक कानून का लिखित रिकॉर्ड जो यहूदी धर्म में पारित किया गया था, टारगम्स, अरामी पैराफ्रेज़ की तरह, और पुराने नियम के अनुवाद भी लिखे गए थे। अंतिम जिसके बारे में हम पहले ही बात कर चुके हैं, लेकिन अंतिम जो महत्वपूर्ण है वह मृत सागर स्क्रॉल है।

हमने एस्सेन्स और कुमरान समुदाय के बारे में बात की। हमारे पास जो दस्तावेज़ हैं जो कुमरान समुदाय की गवाही देते हैं, मैंने आपको उस गुफा की तस्वीर दिखाई। वहाँ गुफाओं की एक श्रृंखला है जहाँ उन्होंने इन दस्तावेज़ों को खोजा है जिन्हें हम मृत सागर स्क्रॉल के रूप में जानते हैं।

इन दस्तावेज़ों में कई दिलचस्प बातें हैं। इनमें से कुछ दस्तावेज़ वास्तव में टिप्पणियाँ हैं, उदाहरण के लिए, पुराने नियम के अंशों पर यह प्रदर्शित करने के लिए कि पुराने नियम में कुमरान समुदाय की स्थापना की वास्तव में कैसे आशा की गई थी और भविष्यवाणी की गई थी। इसलिए, वे अक्सर भविष्यसूचक साहित्य लेते थे और यह दिखाने के लिए एक तरह की टिप्पणी होती थी कि भविष्यवक्ताओं ने वास्तव में इस कुमरान समुदाय की स्थापना की आशंका जताई थी।

याद रखें, कुमरान समुदाय न केवल रोमन शासन से बल्कि यरूशलेम में जिस तरह से चल रहा था उससे भी परेशान था। उन्होंने सोचा कि यरूशलेम और मन्दिर भ्रष्ट हैं। और इसलिए, वे चले

गए, उन्होंने खुद को अलग कर लिया, और यहूदी धर्म के भीतर अपना स्वयं का संप्रदाय, अपना आंदोलन शुरू करने के लिए जंगल में चले गए।

और इसे उचित ठहराने के लिए, वे अक्सर पुराने नियम के अंशों की अपील करते थे ताकि यह दिखाया जा सके कि भविष्यवक्ता जो बात कर रहे थे वह उसकी सच्ची पूर्ति है। वे ईश्वर के सच्चे मंदिर थे। आपको इससे संबंधित दस्तावेज़ भी मिलेंगे, उदाहरण के लिए, कुमरान समुदाय का सदस्य बनने के लिए एक सख्त शासन व्यवस्था थी जिसका पालन करना पड़ता था और यहां तक कि परीक्षण की अवधि भी।

कुमरान समुदाय का पूर्ण सदस्य बनने के लिए आपको स्तरों तक काम करना होगा और परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी। एक दिलचस्प बात जो मैं पिछले दिनों पढ़ रहा था वह यह है कि, मुझे लगता है कि मैंने अपने बच्चों को भी यह बताया था, जब आप थे, यदि आपके पास एक बच्चा था जिसने विद्रोह किया था, तो आप उन्हें बड़ों के पास ले गए, और बच्चे की पत्थर मारकर हत्या कर दी गई क्योंकि जिस तरह से उन्होंने अभिनय किया. तो, आपके पास ऐसे आदेश हैं।

उन्हें इस समुदाय के भीतर, कुमरान समुदाय के भीतर कैसे कार्य करना और रहना है? तो, कुमरान दस्तावेज़ महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें कम से कम बताते हैं कि इस दिन के दौरान कुछ यहूदी क्या सोच रहे थे, उन्होंने पुराने नियम की व्याख्या कैसे की, जब उन्होंने आने वाले मसीहा के बारे में सोचा तो उन्होंने क्या समझा, आदि। तो, वहाँ, यहूदी धर्म है साहित्य का एक समृद्ध भंडार, और ये केवल तीन उदाहरण हैं, मिशनाह, टार्गम्स और मृत सागर स्क्रॉल, जो हमें यहूदी धर्म और यहूदी धर्म और भगवान के लोगों की एक तस्वीर चित्रित करने में मदद करते हैं, वे क्या सोचते थे, उन्होंने क्या सिखाया था, वे पहली शताब्दी में उस समय कैसे रहते थे जब नया नियम उभरा। और फिर, हम अक्सर इनमें से कुछ दस्तावेज़ों का संदर्भ लेंगे जो हमें नए नियम के कुछ अनुभागों को समझने और उजागर करने में मदद कर सकते हैं।

अब, ग्रीक और रोमन दुनिया के साथ-साथ यहूदी दुनिया के राजनीतिक माहौल और पर्यावरण और फिर धार्मिक जलवायु पर्यावरण के बारे में थोड़ी बात करने के बाद, मैं फिर से थोड़ी बात करना चाहता हूँ।, आम तौर पर सांस्कृतिक वातावरण के बारे में, इस संदर्भ में सोचना कि सांस्कृतिक कोड किस तरह से लोगों के एक-दूसरे से संबंधित होने और उनके रहने के तरीके को निर्धारित या निर्देशित करते हैं। वे सांस्कृतिक रूप से किन चीज़ों को महत्व देते थे जिन्होंने उनके निर्णयों को प्रभावित किया और वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित थे? इसका महत्व यह है कि कभी-कभी उनके सांस्कृतिक मूल्य हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से बहुत अलग और भिन्न होते थे। और इसलिए, जब आप कोई पाठ पढ़ते हैं, विशेष रूप से पुराने और नए नियम जैसे प्राचीन पाठ, तो कठिनाई का एक हिस्सा यह है कि जब हम कुछ सांस्कृतिक संदर्भ पढ़ते हैं, तो अनजाने में भी उन्हें पढ़ने और हमारी अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर उनकी व्याख्या करने की प्रवृत्ति हो सकती है। मूल्य और अनुभव.

पहले खुद को दूर करने की कोशिश करने और उस दूरी को पहचानने की कोशिश करने के बजाय, जिसे अपने सांस्कृतिक कोड और मूल्यों के प्रकाश में पाठ को समझने के लिए पार करना होगा, जिसने लोगों के सोचने और बातचीत करने और उनके जीवन जीने के तरीके को

निर्धारित किया होगा। और फिर, मैं बस उनमें से कुछ या तीन सामाजिक मूल्यों पर ध्यान देना चाहता हूँ। पहला वह है जिसे मैंने लेबल किया है हर कीमत पर शर्म से बचें।

यह इस विचार से उपजा है कि संभवतः आज हम जिस अनुरूपता के आदी हैं, उससे कहीं अधिक, एक अर्थ में, सांस्कृतिक कोड या मूल्य बहुत महत्वपूर्ण था। यानी हर कीमत पर शर्मिंदगी से बचना। यदि आप पहली सदी में रहते थे, तो यह आपका दायित्व था कि आप ऐसा व्यवहार करें जो सम्माननीय हो और जिससे आपको या आपके परिवार को किसी भी कीमत पर शर्मिंदगी न उठानी पड़े।

फिर, यह मूल रूप से समाज ही था जिसने निर्धारित किया कि क्या शर्मनाक व्यवहार है और क्या सम्मानजनक व्यवहार है। और आपको उन मानदंडों के अनुसार कार्य करना था। तो, ऐसे समाज में जहां कभी-कभी हम अपने ही व्यक्ति होने और समाज के मानदंडों की धजियां उड़ाने के आदी हो जाते हैं, पहली शताब्दी में, आपने ऐसा नहीं किया।

आप उपयुक्त सांस्कृतिक मानकों के अनुरूप हैं। इसलिए, हर कीमत पर शर्म से बचें। इस तरह से कार्य करें जो सम्मानजनक हो।

यदि आपके चरित्र का सम्मान किया गया, तो आपके सम्मान पर सवाल उठाया गया, आपने शर्मनाक तरीके से काम किया। आपको अपना सम्मान बहाल करने के लिए वह करना होगा जो आवश्यक था। उदाहरण के लिए, नए नियम में, सभी गॉस्पेल, विशेष रूप से सिनोट्रिक गॉस्पेल में यीशु से पूछताछ किए जाने का रिकॉर्ड है, विशेष रूप से गॉस्पेल के अंत में, यीशु की गिरफ्तारी और क्रूस पर चढ़ने से ठीक पहले।

अक्सर, गॉस्पेल में यीशु को उन कुछ समूहों, जिनके बारे में हमने बात की थी, फरीसियों और सद्दूकियों के साथ संघर्ष करते हुए दर्ज किया गया है। और अक्सर वे जो करते हैं वह यह है कि वे प्रश्न पूछकर यीशु को फँसाने की कोशिश करते हैं। और मुझे लगता है कि उन प्रश्नों से निपटने का तरीका न केवल उन्हें यीशु को परेशान करने की कोशिश के रूप में देखना है, बल्कि दूसरी ओर, वे प्रश्न यीशु के सम्मान को चुनौती देने के लिए भी हैं।

एक ऐसे समाज और संस्कृति में जो सम्मान को सबसे अधिक महत्व देता है और अपने सम्मान को बनाए रखता है, सम्मान के उचित नियमों के अनुसार रहता है, अगर फरीसी और सद्दूकी यीशु को अपमानित कर सकते हैं, अगर वे उसके सम्मान को चुनौती दे सकते हैं और उसे शर्मिंदा कर सकते हैं, तो यह उनकी नजर में एक अच्छी बात होगी। तो, दिलचस्प बात यह है कि यीशु अक्सर तुरंत प्रश्न पूछकर उनके सम्मान को चुनौती देते हैं। एक और तरीका जिससे आप खुद को शर्मिंदा कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, यदि किसी ने आपके साथ कुछ किया है, तो यह चलेगा, यह तीसरे सांस्कृतिक कोड या मूल्य के साथ जाता है जिसे हम एक पल में देखेंगे।

लेकिन अगर किसी ने आपके साथ कुछ किया है, जैसे आपको पैसे देना या नौकरी दिलाने के लिए जगह देना या ऐसा कुछ, तो कृतज्ञता दिखाने में असफल होना, उचित तरीके से कृतज्ञता दिखाने में असफल होना अपने आप को अपमानित करना है। यह शर्मनाक हरकत थी। तो फिर, किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में अच्छा बोलना और स्वीकार करना और उसके प्रति अत्यधिक

आभार व्यक्त करना सम्मानजनक था जिसने आपको वित्तीय या अन्यथा कुछ लाभ प्रदान किए थे।

इसलिए, हर कीमत पर शर्म से बचें। एक अन्य उदाहरण, एक दिलचस्प दृष्टांत है जो यीशु सिखाते हैं। यदि आपको यह याद है, वह आदमी जो आधी रात को बिस्तर पर था और कोई, वास्तव में उसका पड़ोसी था, कोई उसके पड़ोसी के घर आया और उससे रोटी मांगी, कोई व्यक्ति जो फिर से यात्रा कर रहा था, जो सम्मानजनक बात थी वह उस व्यक्ति को स्वीकार करना था और उनके लिए प्रावधान करें।

उस व्यक्ति को दूर करना आपके लिए शर्म की बात होगी। लेकिन इस व्यक्ति के पास रोटी नहीं है और फिर, भोजन न देना उसके लिए शर्मनाक होगा। इसलिए, वह अपने पड़ोसी के घर जाता है जो सो रहा होता है और उसका परिवार फर्श पर सो रहा होता है और वह दरवाजा खटखटाता है और यह कहता है कि वह व्यक्ति जो सो रहा था, हालांकि वह उठना नहीं चाहता था, लेकिन वह उठ गया।

इसका मतलब शायद अपने बच्चों और परिवार के ऊपर कदम रखना और उन्हें जगाना था, लेकिन उसने ऐसा किया। क्यों? क्योंकि यह उसके लिए लज्जाजनक होता कि वह उठकर इस व्यक्ति की आवश्यकता पूरी न करता और अपने पड़ोसी को रोटी न देता ताकि उसका पड़ोसी दूसरे व्यक्ति को खिला सके। इसलिए, हर कीमत पर शर्मिंदगी से बचते हुए सम्मानजनक तरीके से कार्य करने का यह विचार एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक मूल्य था।

एक और बात, कोई भी व्यक्ति द्वीप नहीं है। इसे संक्षेप में कहें तो, एक व्यक्ति के रूप में आप कौन थे, इससे अधिक महत्वपूर्ण वह समूह था जिससे आप जुड़े थे। इसलिए आपका परिवार, आपका विस्तृत परिवार, वगैरह, एक व्यक्ति के रूप में आप कौन थे, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।

और हमारी दुनिया में कुछ संस्कृतियों को दूसरों की तुलना में समझने में आसानी होती है। अंतिम हैं संरक्षक और उनके ग्राहक। पहली शताब्दी में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिशीलता प्रतीत होती थी।

और यह कैसे हुआ, यह एक संरक्षक था, और आपको इन दो शब्दों को जानने की आवश्यकता है, और यह सांस्कृतिक गतिशीलता नए नियम में कई स्थानों पर सामने आएगी, खासकर जब हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक तक पहुँचते हैं। ऐसा कभी-कभी हर जगह लगता है। लेकिन पहली शताब्दी में संरक्षक-ग्राहक संबंध ऐसे ही थे।

और हर कीमत पर शर्मिंदगी से बचते हुए, इसे पहले वाले के साथ थोड़ा सा लपेटा गया है। संरक्षक-ग्राहक संबंध इस प्रकार चला गया। एक संरक्षक आमतौर पर होता था, हालाँकि पहली शताब्दी में धनी अभिजात वर्ग अल्पसंख्यक थे, हम देखेंगे कि एक ही क्षण में, एक संरक्षक समाज का एक धनी सदस्य था।

एक संरक्षक जो करना चुन सकता है वह उन लाभों में से कुछ को किसी ऐसे व्यक्ति को प्रदान करना या विस्तारित करना है जिसके पास उतना नहीं था या जिसके पास करने के लिए कम था या सामाजिक आर्थिक सीढ़ी से नीचे था। इसलिए, एक संरक्षक जो अमीर है, वह पूरे शहर के लिए कुछ निधि देना चुन सकता है, शायद काम या वित्तीय लाभ प्रदान करना चुन सकता है या किसी ऐसे व्यक्ति के लिए सहायता प्रदान करना चुन सकता है जो आर्थिक रूप से इतनी अच्छी स्थिति में नहीं है। और वह संरक्षक था।

ग्राहक वह व्यक्ति था जिसकी वह सहायता कर रहा था। तो, संरक्षक एक धनी व्यक्ति है। ग्राहक कम काम करने वाले व्यक्ति हैं जिनकी संरक्षक मदद कर रहे हैं और उन तक पहुंच रहे हैं और वित्तीय लाभ पहुंचा रहे हैं।

वित्तीय लाभ के बदले में, ग्राहक से मूल रूप से उस व्यक्ति के बारे में अच्छा बोलने और उस व्यक्ति का समर्थन करने की अपेक्षा की जाती थी, शायद राजनीतिक रूप से, क्योंकि उसने जो किया था। तो फिर, जब एक संरक्षक ने वित्तीय लाभ दिया है या अन्यथा, एक ग्राहक के रूप में, संरक्षक के प्रति अत्यधिक कृतज्ञता दिखाने में असफल होने के लिए, फिर से, अकल्पनीय था और अभिनय के लिए खुद पर शर्मिंदगी डालना था बहुत ही अपमानजनक तरीका। ताकि संरक्षक-ग्राहक गतिशील हों, संरक्षक धनी व्यक्ति हों, ग्राहक, जो ऐसा करने में कम हैं, वे अपने समर्थन के बदले में लाभ बढ़ाने का विकल्प चुन सकते हैं और बदले में मूल रूप से घूम सकते हैं और इस बात का घमंड कर सकते हैं कि वे शहर में कितने अद्भुत थे। हर किसी को पता चल जाएगा कि उन्होंने कितना अच्छा काम किया है।'

तो यह पहली शताब्दी में संरक्षक-ग्राहक की तरह गतिशील था। और जैसा कि मैं आपको दिखाते की आशा करता हूं, वह गतिशीलता उन कुछ समस्याओं के पीछे है जिन्हें पॉल 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में संबोधित कर रहा था। और हम देखेंगे कि यह कैसे काम करता है।

उन तीन सांस्कृतिक गतिशीलता के संबंध में, अधिक सामान्यतः, बस बहुत जल्दी और सरसरी तौर पर पहली सदी में प्रमुख वर्गों का चित्रण करने के लिए, फिर से, फिलहाल केवल तीन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, और फिर से, मैं नहीं चाहता यह सुझाव देने के लिए कि ये वायुरोधी हैं या कहने को और कुछ नहीं है। लेकिन आम तौर पर, मैं तीन वर्गों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूं। पहला धनी अभिजात वर्ग होगा।

फिर, पहली शताब्दी में अधिकांश संपत्ति कुछ विशिष्ट लोगों के हाथों में केंद्रित रही होगी। और फिर, वे अधिकांशतः बहुत कम थे। अधिकांश लोग गरीबों की दूसरी श्रेणी में आ गए होंगे, यानी वे लोग जो दिन-ब-दिन अपना अस्तित्व बचाने की कोशिश कर रहे थे।

इनमें से अधिकांश कभी-कभी किसान किसान थे, जो फिर से, बस अस्तित्व बनाने की कोशिश कर रहे थे, सचमुच सोच रहे थे कि उनका अगला भोजन कहां से आ रहा है। इसलिए, जब यीशु ने अपने शिष्यों से प्रार्थना करने के लिए कहा, हमें आज हमारी आज की रोटी दो, हमें आज हमारी दैनिक रोटी दो, या यह हमें हमारा आज भी दे सकता है, कल के लिए हमारी रोटी, तो उनके पाठक समझ गए होंगे कि वह किस बारे में बात कर रहे थे। . वस्तुतः, उस समय की लगभग 70%

आबादी ऐसे लोग थे जो अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, दिन-प्रतिदिन जी रहे थे, और कभी-कभी अक्सर सोचते थे कि उनका अगला भोजन कहां से आएगा।

अंतिम श्रेणी दासों की होगी। और ग्रीको-रोमन दुनिया व्यावहारिक रूप से कभी-कभी गुलामी की प्रणाली पर निर्मित होने के लिए जानी जाती थी। हालाँकि पहली सदी में गुलामी का दायरा चरम पर था।

अक्सर जब हममें से कुछ लोग गुलामी के बारे में सोचते हैं, यदि आप ऐतिहासिक रूप से थोड़ा भी प्रबुद्ध हैं, तो हम गृहयुद्ध के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका के गृहयुद्ध के संदर्भ में सोचते हैं, यही वह जगह है जहां गुलामी मुख्य रूप से नस्लीय रूप से प्रेरित थी। पहली शताब्दी में, ऐसा नहीं था। आप इसलिए गुलाम नहीं बने क्योंकि आप किसी खास जाति या उसके जैसी किसी जाति से थे।

आपके गुलाम बनने के कई कारण थे। उनमें से एक यह था कि अब आप जीविकोपार्जन का जोखिम नहीं उठा सकते। उदाहरण के लिए, अपनी जीविका चलाने का एक तरीका किसान बनना और खेत किराये पर लेना है, और आपकी उपज का कुछ हिस्सा किराया चुकाने में जाएगा।

यदि आपकी फसल खराब हो गई, तो आप अपना लगान चुकाने में असमर्थ होंगे और अंततः आपको खुद को गुलामी के लिए बेचना पड़ा। हालाँकि कभी-कभी, पहली सदी में गुलामी एक सकारात्मक अनुभव रहा होगा। कुछ दासों के रहने की स्थिति बहुत अच्छी थी और वे काफी अच्छा खाना खाते थे।

उनमें से कुछ के पास अपनी स्वतंत्रता खरीदने के अवसर भी थे। उनमें से कुछ को जिम्मेदारी दी गई। स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर वे दास थे जिन्हें रोम की खदानों में सेवा के लिए नियुक्त किया गया था, जो बहुत क्रूर और बहुत, बहुत क्रूर स्थितियाँ थीं और संभवतः बीच में कई स्थितियाँ थीं।

ग्रीको-रोमन साम्राज्य में गुलामी बहुत महत्वपूर्ण थी और पहली सदी के रोम का एक अभिन्न अंग थी। लेकिन फिर, संभवतः विभिन्न प्रकार की गुलामी काफी अच्छी स्थितियों से लेकर खराब परिस्थितियों तक भी फैली हुई थी। तो यह, एक बार फिर, आपको पहली शताब्दी में रहने की स्थिति की सामाजिक और आर्थिक संरचना का एक मोटा खाका देता है।

फिर, महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि लगभग 70 प्रतिशत लोग बहुत गरीब थे। और गरीबों से मेरा मतलब है, हम कल क्या खाएंगे? इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूँ, मैं कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ कि सांस्कृतिक, यहां तक कि भौगोलिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि किसी पाठ, नए नियम के पाठ को पढ़ने में कैसे मदद करती है। लेकिन ऐसा करने से पहले, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि या आर्थिक स्थिति के प्रकार पर कोई प्रश्न? हाँ।

ज़रूर। हाँ। नहीं, यह बहुत अच्छी बात है।

इसका मतलब उस प्रकार का संक्षिप्त उत्तर है, यदि आप लंबा उत्तर चाहते हैं, तो बाइबिल व्याख्याशास्त्र के लिए साइन अप करें। देखिए, यह कक्षा मुझे बाइबिल अध्ययन को प्लग इन करने के सभी प्रकार के अवसर देती है। लेकिन इस प्रकार का संक्षिप्त उत्तर यह है कि सांस्कृतिक परिवेश को समझना केवल इस तथ्य की वास्तविकता को समझना है कि भगवान ने खुद को हमारे संदर्भ में या हर किसी के समझने के लिए सामान्य शब्दों में प्रकट करने के लिए नहीं चुना है।

परन्तु परमेश्वर ने स्वयं को एक विशिष्ट समय पर प्रकट करना चुना। इसलिए, सबसे पहले, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि इसका क्या मतलब है और यह कैसा दिखता है। इससे पाठ को समझने के हमारे तरीके में क्या फर्क पड़ता है? इसलिए, एक बार जब हम यह समझ जाते हैं कि ईश्वर ने स्वयं को कैसे प्रकट किया है और उन मूल व्यक्तियों के लिए इसका क्या अर्थ है, जिनके सामने उसने स्वयं को प्रकट किया है, तो हम आगे बढ़ने और पूछने में सक्षम हैं, फिर उसके आधार पर, मैं कैसे पहचान सकता हूँ यह अभी भी परमेश्वर का स्थायी वचन है, मैं इसे अपने जीवन में कैसे लागू करूँ? तो, ऐसा नहीं है, आइए इसे इसकी पहली शताब्दी में समझें और इसे वहीं छोड़ दें, न ही यह है, मुझे बस इस पाठ को पढ़ने दें और देखें कि मुझे क्या लगता है कि इसका क्या मतलब है।

लेकिन मुझे यह पूछने दीजिए कि भगवान ने अपने पहले पाठकों को क्या बताना चाहा था? और फिर यह समझने के बाद, वह आज भी एक बिल्कुल अलग वातावरण में भगवान के लोगों से कैसे बात करना जारी रखता है? लेकिन मुझे लगता है कि कभी-कभी हम बाद वाले को गलत समझ लेंगे। इसे गलत तरीके से लागू करना या इसे गलत तरीके से समझना आसान है अगर हमने पहले इसे उस मूल संदर्भ के प्रकाश में नहीं समझा है जिसमें भगवान ने संवाद किया था। तो यह एक तरह से दोनों छोर है।

भगवान ने स्वयं से कैसे संवाद किया और एक विशिष्ट संदर्भ में अपने पहले श्रोताओं और पाठकों के सामने खुद को कैसे प्रकट किया? और एक बार जब हम इससे जूझ लेते हैं और इसे समझ लेते हैं, तो हम यह सवाल पूछ सकते हैं कि भगवान आज भी अपने लोगों से कैसे बात करना जारी रखते हैं, भले ही एक बहुत ही अलग संदर्भ में? बहुत अच्छा प्रश्न। और हम इसके बारे में, फिर से, बाइबिल के व्याख्याशास्त्र में थोड़ा अधिक सम्मिलित स्तर पर काफी अधिक बात करते हैं। बहुत अच्छा प्रश्न।

और वैसे, दूसरी चीज़ आपकी मदद करेगी, क्रेग ब्लॉम्बर्ग की किताब, मेकिंग सेंस ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट, का आखिरी अध्याय भी आपको उस प्रश्न का उत्तर देने में मदद करेगा। यह कुछ इसी तरह का लक्ष्य है। हम ईश्वर के बहुत ही सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित ऐतिहासिक रहस्योद्घाटन को उसके लोगों तक कैसे ले जाते हैं, और वह कैसे बोलना जारी रखता है? जैसा कि आपने कहा, परमेश्वर का वचन सक्रिय और जीवित है।

यह हर समय सभी लोगों से कैसे बात करता रहता है? ठीक है। नये नियम से दो उदाहरण। उनमें से एक से आप संभवतः परिचित हैं, और हो सकता है कि आप पहले से ही जानते हों, कुछ चीजों से परिचित हों जिनके बारे में मैं कहने जा रहा हूँ, लेकिन यह एक और नज़र डालने लायक है,

सिर्फ इसलिए कि यह बहुत अच्छी तरह से दिखाता है कि हम अक्सर कैसे व्याख्या करते हैं मुख्य रूप से अपने स्वयं के लेंस के माध्यम से पाठ करें, जो बुरा नहीं है।

यदि आपके पास न्यू टेस्टामेंट को देखने के लिए कोई लेंस नहीं है, भले ही वे आपके अपने हों, तो आप इसे कभी नहीं समझ पाएंगे। इसलिए, नए नियम को देखने के लिए कुछ परिप्रेक्ष्य का होना आवश्यक है। लेकिन यह महसूस करने के लिए कि कभी-कभी नए नियम को उस परिप्रेक्ष्य को सही करने की अनुमति दी जाती है, और हमें इसे पढ़ने और इसे फिर से समझने में मदद करने के लिए जैसा कि भगवान ने मूल रूप से अपने लोगों से संवाद किया था, ताकि हम इसे आज भगवान के लोगों के जीवन में अधिक सटीक रूप से लागू कर सकें। .

जब हम पढ़ते हैं, विशेष रूप से कथात्मक, लेकिन जब हम पढ़ते हैं, तो पढ़ना अक्सर अंतरालों को भरने की प्रक्रिया भी होती है। अगर मैं वह सब कुछ लिखूं जो मैं सोच रहा था और वह सब कुछ जो मैं आपको बताना चाहता था, तो लिखना एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया होगी। जब मैं आपसे संवाद करता हूं, तो मैं आपकी ओर से कुछ बातें मान लेता हूं।

मैं मानता हूं कि आप कुछ चीजें जानने वाले हैं, और मैं मानता हूं कि मैं जो कहने जा रहा हूं उसे समझने के लिए आपके पास सही दृष्टिकोण, सही पृष्ठभूमि और सही उपकरण होंगे। इसलिए, जो मैं आपसे कहता हूं वह आम तौर पर उन सभी चीजों का हिमशैल का सिरा मात्र होता है जिन्हें मैं संप्रेषित करना चाहता हूं। और फिर, मैं एक तरह से रिक्त स्थान भरने के लिए आप पर भरोसा कर रहा हूं।

यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब हम बाइबिल का पाठ पढ़ते हैं क्योंकि इसी तरह, पाठ में कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन्हें अक्सर अंतराल कहा जाता है। और इससे मेरा सीधा सा मतलब है, फिर से, बाइबिल के लेखकों ने भी वही काम किया। वे मानते हैं कि उनके पाठक कुछ बातें जानते थे।

उन्हें हर शब्द, हर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विशेषता, मूल्य, यह और वह का अर्थ समझाने की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने मान लिया कि पाठक रहस्योद्घाटन को समझने और वे क्या कह रहे हैं, यह समझने के लिए उचित विवरण भरेंगे। अब, कठिनाई यह है कि, 21वीं सदी के पाठकों के रूप में, जब हम कोई पाठ पढ़ते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से उन विवरणों को भरते हैं, और अपने स्वयं के सांस्कृतिक विचारों, मूल्यों और पृष्ठभूमि के साथ रिक्त स्थान या अंतराल को भरते हैं।

और इसलिए जब हम बाइबिल पाठ पर आते हैं, तो यह पूछने लायक है, यह खुद को याद दिलाने लायक है कि कुछ अलग ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विशेषताएं क्या हो सकती हैं जो मुझे इसे पढ़ने में मदद करेंगी? न केवल मेरी अपनी धारणाओं और मेरे अपने दृष्टिकोण के अनुरूप, बल्कि मूल लेखक और मूल पाठकों ने इसे सबसे पहले कैसे समझा होगा। उन्होंने इसे कैसे पढ़ा होगा? कौन सी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि? कौन सी ऐतिहासिक बातें? किन भौगोलिक चीजों ने रास्ते को प्रभावित किया होगा? लेखक क्या मान रहा था कि इससे पाठकों के पाठ पढ़ने के तरीके पर प्रभाव पड़ा होगा? और फिर, मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहता हूं। उनमें से एक ल्यूक अध्याय 10 और श्लोक 25 से 37 में पाया जाता है।

और मैं इसे आपके लिए पढ़ूंगा, और आप में से अधिकांश शायद पहले से ही जानते हैं कि यह क्या है, लेकिन जैसे ही मैं पढ़ना शुरू करूंगा आप में से कुछ लोग इसे पहचान लेंगे। यीशु शिक्षा दे रहे थे, और तभी ल्यूक 10 का श्लोक 25 शुरू होता है, तभी एक वकील यीशु की परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ। शिक्षक, उन्होंने कहा, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? उस ने उस से कहा, यीशु ने उस से कहा, व्यवस्था में क्या लिखा है? आप वहां क्या पढ़ते हैं? और वकील ने उत्तर दिया, तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे हृदय से, अपनी सारी आत्मा से, अपनी सारी शक्ति से, अपनी सारी बुद्धि से, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना चाहिए।

और यीशु ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है, ऐसा कर, तो तू जीवित रहेगा। परन्तु वकील ने अपने को निर्दोष ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, मेरा पड़ोसी कौन है? तब यीशु ने उत्तर दिया, और उसे एक अच्छी परिभाषा देने और कहने के बजाय, ठीक है, यहाँ एक पड़ोसी क्या है, आइए देखें कि पड़ोसी शब्द का क्या अर्थ है, और फिर मैं परिभाषित करूंगा कि पड़ोसी क्या है, और हम पैरामीटर रखेंगे आसपास पड़ोसी क्या है तो आप समझ सकते हैं। इसके बजाय, यीशु ने एक दृष्टान्त कहकर प्रतिक्रिया दी जैसा वह अक्सर करता था, और यह अच्छे सामरी का दृष्टान्त है।

और आप कहानी अच्छी तरह से जानते हैं, कोई जेरिको की सड़क पर यात्रा कर रहा है, चोर उसे कूदते हैं और उसे पीटते हैं और उसके कपड़े उतार देते हैं, उसके पास जो कुछ भी है उसे ले लेते हैं, और उसे वहीं आधा मरा हुआ छोड़ दिया जाता है और खून बह रहा होता है। एक पुजारी चलता है और सड़क के दूसरी ओर चला जाता है क्योंकि फिर भी, पुजारी को किसी शव को छूने की अनुमति नहीं है। वह निश्चित नहीं हो सका कि यह आदमी जीवित है या मर गया, इसलिए वह किसी शव को छूकर अपवित्र होने का जोखिम नहीं लेना चाहता था, इसलिए वह सड़क के दूसरी ओर चला गया और लेवी के साथ भी ऐसा ही हुआ।

अगला व्यक्ति जो आता है वह एक सामरी है, और सामरी रुकता है और उसे सहायता प्रदान करता है, उसके घावों पर पट्टी बांधता है, उसे एक मोटल में ले जाता है, और यहां तक कि उस व्यक्ति के बेहतर होने तक उसके भरण-पोषण के लिए भुगतान करने की पेशकश भी करता है। और फिर अंत में यीशु कहते हैं, और जाओ और वैसा ही करो। इसलिए, हम इस दृष्टान्त को एक अच्छे उदाहरण के रूप में पढ़ते हैं कि पड़ोसी होने का क्या मतलब है।

मेरा पड़ोसी कौन है? यह कोई भी है जिसे ज़रूरत है, और हमें किसी भी ज़रूरतमंद के लिए एक अच्छा पड़ोसी बनने की ज़रूरत है। और वास्तव में, यह दृष्टान्त अक्सर विभिन्न परोपकारी समाजों के लिए सामरी शब्द का उपयोग करने के लिए एक स्पिंगबोर्ड बन गया है। यहां तक कि कभी-कभी अस्पतालों को गुड सेमेरिटन हॉस्पिटल या सेमेरिटन हॉस्पिटल भी कहा जाता है।

वर्षों पहले, एक ईसाई बीमा कंपनी हुआ करती थी जिसे गुड सेमेरिटन आदि कहा जाता था। तो, आप जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। यहीं से आपको हमारे धर्मनिरपेक्ष समाज में भी एक अच्छे सामरी के बारे में विचार मिलता है।

यह इस दृष्टांत से आता है। कठिनाई यह है कि, मुझे यकीन नहीं है कि यीशु का यही मतलब था और उनके पाठकों ने इसे पहले कैसे समझा होगा। ऐसा लगता है कि हमारे समय में, हमने सामरी के व्यक्तित्व को पालतू बना लिया है और उसे स्वच्छ बना दिया है।

यदि आपको अपने पुराने नियम के सर्वेक्षण से याद है, तो सामरियों का एक लंबा इतिहास है, जो इज़राइल के निर्वासन और उनकी कैद तक जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जो लोग सामरिया शहर में रह गए थे, उन्हें कुछ लोग आधा कहते थे- नस्लें वे पूर्णतः यहूदी नहीं थे। तो यह उनके खिलाफ एक हमला है।

यहूदियों ने उन्हें हेय दृष्टि से देखा होगा क्योंकि वे शुद्ध नस्ल के या पूर्ण-रक्त वाले यहूदी नहीं थे। दूसरे शब्दों में, वे परमेश्वर के सच्चे लोग नहीं थे। लेकिन इससे भी अधिक, यहूदियों और सामरियों के बीच संबंधों का इतिहास अच्छा नहीं था।

उनके बीच प्यार में कोई कमी नहीं आई और ऐसे कई मौके आए जब उनके बीच रिश्ते बहुत खराब थे। इसलिए, जब यीशु एक सामरी को नायक बनाता है, तो कोई भी यहूदी या कोई ग्रीको-रोमन पाठक जो पुराने नियम से परिचित था, उसने तुरंत पहचान लिया होगा कि इस दृष्टांत का नायक सबसे अप्रत्याशित व्यक्ति था जिसके बारे में उन्होंने सोचा होगा कि यीशु एक नायक के रूप में उपयोग करेंगे। फिर, हमने सामरी को इतना पालतू और स्वच्छ बना दिया है कि अब हमें इस दृष्टांत की पूरी ताकत नहीं मिलती है।

एक अच्छा सामरी बिल्कुल ही अस्वीकार्य होगा। वह एक अच्छा सामरी नहीं होता। सामरी घृणित थे, इतने घृणित कि आप सामरिया से यात्रा करने से बचने के लिए कुछ भी कर सकते थे क्योंकि वे अशुद्ध थे और यहूदियों के साथ उनके अच्छे संबंध नहीं थे।

इसलिए, जब यीशु सामरी को नायक बनाते हैं, तो यह अकल्पनीय होगा। आज निकटतम समानता यह हो सकती है कि, फिर से, मैं इस बारे में बात नहीं कर रहा हूं कि हम इन लोगों को कैसे देखते हैं, लेकिन आम तौर पर समाज कभी-कभी उन्हें कैसे देखता है, इस दृष्टांत के नायक को एड्स से पीड़ित समलैंगिक या मुस्लिम जिहादी आतंकवादी बनाना है। उस व्यक्ति को इस दृष्टान्त का नायक बनाना, उससे भी अधिक होगा जो यीशु एक सामरी को इस दृष्टान्त का नायक बनाकर कर रहे थे।

वह एक ऐसे व्यक्ति को ले जा रहा था जिसे वह स्वयं नहीं, बल्कि उस समय बहुत से लोग घृणा करते थे और घृणित मानते थे और उस व्यक्ति को नायक बना रहे थे। तो, इस दृष्टांत का उद्देश्य हमारे लिए पड़ोसी होने और प्यार दिखाने का एक अच्छा अनुस्मारक मात्र नहीं है। शायद मुद्दा यह है कि आपका पड़ोसी अक्सर आपका सबसे बड़ा दुश्मन होता है, वह व्यक्ति जिससे आप घृणा और घृणा करते हैं।

एक और उदाहरण, एक और उदाहरण कि कैसे इस बार सांस्कृतिक, यहां तक कि भौगोलिक, पृष्ठभूमि हमें किसी पाठ को समझने में मदद करती है। बाइबिल की आखिरी किताब में, इस आखिरी किताब की शुरुआत में, रहस्योद्घाटन की किताब, पहले अध्याय दो और तीन सात पत्रों

की एक श्रृंखला है, या अधिक सटीक रूप से सात संदेश, सात चर्चों के लिए सात भविष्यसूचक संदेश हैं। सात चर्च पश्चिमी एशिया माइनर में स्थित थे, जो आधुनिक तुर्की है।

इनमें से अधिकांश शहरों में, आप जानते हैं, काम किया गया है, उन्होंने पुरातात्विक खोजें की हैं और इनमें से अधिकांश स्थानों के खंडहर पाए हैं। इफिसस, स्मिर्ना और थुआतीरा जैसे शहर। और उन शहरों में से एक उन शहरों में से एक था जिन्हें लेखक ने अध्याय तीन और छंद 15 और 16 में संबोधित किया है।

यह लौदीकिया का नगर था। लौदीकिया पश्चिमी एशिया माइनर के शहरों में से एक था। फिर, पहली सदी में पश्चिमी आधुनिक तुर्की।

और प्रकाशितवाक्य का लेखक शहर में यीशु मसीह का संदेश लाता है। और यहाँ उन्हें उनसे क्या कहना है। मैं श्लोक 14 पढ़ूंगा और फिर 15 और 16 वे श्लोक हैं जिन पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ।

और लौदीकिया की कलीसिया के दूत को आमीन के वचन लिखो। यह ईसा मसीह का संदर्भ है। आमीन के शब्द, वफादार और सच्चे गवाह, भगवान की रचना की उत्पत्ति और शुरुआत।

तो इस प्रकार मसीह का वर्णन किया गया है। अब यहाँ मसीह लौदीकिया नाम के इस शहर के चर्च से क्या कहते हैं। मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न तो गरम है और न ठंडा। मेरी इच्छा है कि आप न तो गर्म होते और न ही ठंडे। इसलिये कि तू गुनगुना है, और न गरम है, और न ठंडा, मैं तुझे अपने मुँह में से उगलने पर हूँ। मैं जिस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह गर्म, ठंडे और गुनगुने की कल्पना है।

दूसरे शब्दों में, यीशु क्या कह रहे हैं? खैर, बस वे गर्म या ठंडे नहीं हैं, वे गुनगुने हैं। और उसके कारण, वह उन्हें अपने मुँह से उगलने वाला है। वे घृणित हैं।

जाहिर है, यीशु शाब्दिक रूप से बात नहीं कर रहे हैं, वह इसका उपयोग उनकी आध्यात्मिक स्थिति को दर्शाने के लिए कर रहे हैं। ये वैसे ही गुनगुने होते हैं जैसे किसी को गुनगुना पानी पीना पसंद नहीं होता। और यह सिर्फ गुनगुना नहीं है, शायद यह विचार है कि यह सड़ा हुआ और घृणित है।

इसलिए यीशु कहते हैं, मैं तुम्हें अपने मुँह से उगलने पर हूँ। यीशु ने लौदीकिया नामक इस शहर में चर्च को इसी तरह देखा। लेकिन उन्हें गर्म और ठंडा कहने और यह कहने से कि आप गर्म या ठंडे नहीं हैं, आप गुनगुने हैं, उनका क्या मतलब है? प्रकाशितवाक्य 3, 15-16, गर्म, ठंडा, या गुनगुना।

जिस तरह से हम आम तौर पर इसे पढ़ते हैं, और कम से कम जिस तरह से मुझे इसे हमेशा पढ़ना सिखाया जाता है, वह इतना गर्म है, ये शब्द ईसाई के आध्यात्मिक तापमान को दर्शाते हैं। इतना गर्म होना एक सकारात्मक बात है। हमारे ईसाई शब्दजाल में, हम कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति मसीह के लिए जल रहा है या प्रभु के लिए जल रहा है।

इतना गर्म होना एक सकारात्मक बात है। ठंड इसका द्विआधारी विपरीत है। और ठंड नकारात्मक है।

उदासीन होना मसीह के प्रति विमुख होना और उदासीन होना और बिल्कुल भी परवाह न करना है। और गुनगुना एक तरह का मिश्रण है, यह बीच में है। और इसलिए जब हम उस टेम्पलेट को प्रकाशितवाक्य 3:15-16 पर लागू करते हैं, तो यीशु क्या कह रहे हैं, क्या आप न तो गर्म हैं और न ही ठंडे हैं, आप गुनगुने हैं।

वह कह रहा है, आप न तो गर्म हैं, इसका मतलब है कि आप नहीं हैं, फिर से आधुनिक शब्दजाल का उपयोग करने के लिए, आप गर्म नहीं हैं, आप मसीह के लिए आग में नहीं हैं, और आप ठंडे नहीं हैं, आप' आप मसीह के प्रति विमुख नहीं हैं, या आप मसीह के विरुद्ध या मसीह के विरोधी नहीं हैं। इसके बजाय, आप गुनगुने हैं, आप ठीक मध्य में एक प्रकार से इच्छा-रहित हैं। आप बाड़ पर सवार हैं, और आप मसीह के लिए खड़े नहीं होंगे, और आप मसीह के खिलाफ खड़े नहीं होंगे।

और फिर दिलचस्प बात यह है कि लेखक आगे बढ़ता है और कहता है, काश आप गर्म या ठंडे होते। दूसरे शब्दों में, वह तब कह रहा है, काश तुम या तो गर्म होते, कि तुम मेरे लिए स्टैंड लेते, या मैं चाहता कि तुम ठंडे होते। कम से कम मेरे खिलाफ खड़े हो जाओ, लेकिन गुनगुने और मनमौजी मत बनो और बाड़ और बीच में मत रहो।

और इसलिए आज भी, आप शायद लोगों को गुनगुने ईसाइयों के बारे में बात करते हुए सुनेंगे। इसका मतलब है कि वे एक तरह से उदासीन हैं, वे नहीं जानते कि किस रास्ते पर जाना है, वे बिल्कुल बीच में हैं, वे मसीह के लिए आग में नहीं हैं, वे मसीह के प्रति ठंडे नहीं हैं, लेकिन वे बस हैं वहाँ बीच में बैठने जैसा। और अब लेखक चाहता है कि वे मसीह के पक्ष या विपक्ष में खड़े हों, लेकिन बीच में खड़े न हों।

क्या कभी किसी ने इसे ऐसे समझते हुए सुना है? हममें से कुछ के पास है, हाँ। और फिर, जब हम गुनगुने पानी के बारे में सोचते हैं तो आमतौर पर हम यही सोचते हैं। हालाँकि, मुझे विश्वास है कि लेखक का इरादा यह नहीं था।

इसके बजाय, यहीं पर हमें पहली शताब्दी में पर्यावरण के बारे में थोड़ा समझने की जरूरत है। लौदीकिया एक अनोखा शहर था क्योंकि इसमें पहली सदी के किसी भी शहर के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता का अभाव था, और इसे एक अच्छी जल आपूर्ति या जल स्रोत के पास बनाया जाना था। सवाल? लौदीकिया? मैं शायद नहीं कर सकता।

लौदीकिया। ठीक है, हम वहाँ जाते हैं, धन्यवाद। ठीक है, मैं कहाँ था? लौदीकिया शहर में पहली सदी के शहर की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता का अभाव था, और वह थी अच्छी जल आपूर्ति।

अधिकांश शहर ऐसे स्थान के पास बनाए जाएंगे जहाँ उन्हें अच्छे पानी तक आसानी से पहुंच हो। इसके बजाय, उसके कारण, लौदीकिया को वास्तव में शहर के बाहर से पानी की पाइप लाइन

लगानी पड़ी। और जैसा कि मैं इसे समझता हूँ, उत्खनन से एक नलिका प्रणाली का भी पता चला है जो लौदीसिया में पानी को पाइप के जरिए पहुंचाती होगी।

मैं बिल्कुल निश्चित नहीं हूँ कि उन्हें सारा पानी कहां से मिला, लेकिन मुद्दा यह है कि चूंकि उनके पास पानी की अच्छी आपूर्ति नहीं थी, इसलिए वे इसे बाहर से लेकर आए। समस्या यह थी कि जब तक पानी वहां पहुंचा, तब तक यह बल्कि गुनगुना और गुनगुना और बासी और ठहरा हुआ सा था। यह वास्तव में पीने के लिए उपयुक्त नहीं था।

दूसरे शब्दों में, यह गुनगुना था. तो, जो हो रहा है वह यह है कि जॉन एक छवि, एक रूपक का उपयोग कर रहा है, जिसे उसके पाठक पहचान सकते हैं। वह, सबसे पहले, आध्यात्मिक तापमान, मसीह के लिए गर्म और ठंडे या बीच के बारे में नहीं सोच रहा है।

वह, सबसे पहले, लौदीकिया शहर की संस्कृति और भूगोल से शुरुआत कर रहे हैं। तो, वह उनसे कहता है, वह उनकी तुलना गुनगुने पानी से करता है। क्यों? क्योंकि वे यह समझ गये थे।

उनके पास पानी की पाइप थी क्योंकि उनके पास अपनी पानी की आपूर्ति नहीं थी, उन्होंने इसे पाइप से डाला था। और जब तक यह वहां पहुंचा, संभवतः, फिर से, यह बासी और स्थिर और गुनगुना था, और यह पीने के लिए अच्छा नहीं था. इस प्रकार, यीशु ने कहा, आप अपनी स्वयं की जल आपूर्ति की तरह हैं।

यह बहुत घृणित है, मैं तुम्हें अपने मुँह से उगलने ही वाला हूँ। यीशु उनकी गतिविधि से कितना चकित था। अब, गर्मी या सर्दी का क्या? फिर, हमें इसे अपने आध्यात्मिक अनुभव के परिप्रेक्ष्य से या जिस तरह से हम अपने आध्यात्मिक शब्दजाल में इन शब्दों का उपयोग करते हैं, उसके परिप्रेक्ष्य से पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि इसके बजाय, हमें इसे पहली शताब्दी के लौदीकिया शहर के प्रकाश में समझने की ज़रूरत है।

दिलचस्प बात यह है कि लौदीकिया के पास दो शहर थे जो अपनी जल आपूर्ति के लिए भी जाने जाते थे। उनमें से एक हिरापोलिस नाम का शहर था। हिरापोलिस इन गर्म झरनों के लिए प्रसिद्ध था, फिर भी, मैं वहां कभी नहीं गया, लेकिन मैंने तस्वीरें देखी हैं, और मैं समझता हूँ कि उनके पास ये हैं, या उनके पास कभी-कभी ये गर्म झरने होते। पहाड़ियों का औषधीय महत्व था, और लोग दूर-दूर से यात्रा करके इस पानी में स्नान करने आते थे और उपचार के लिए इसका उपयोग करते थे।

और फिर, हिरापोलिस अपने गर्म पानी के लिए प्रसिद्ध था जिसमें उपचार गुण और औषधीय महत्व थे। एक और नगर था जो लौदीकिया से अधिक दूर नहीं था, कुलुस्से नाम का नगर। हम उस शहर के बारे में बाद में बात करेंगे क्योंकि पॉल ने कुलुस्से की चर्च को एक पत्र लिखा था।

आप इसे कुलुस्सियों को लिखे पत्र के रूप में जानते हैं। लेकिन पहली शताब्दी में कोलोसे अपनी जल आपूर्ति के लिए भी प्रसिद्ध था, लेकिन यह अपने ठंडे, ताज़ा, शुद्ध पानी और पीने के लिए अच्छे पानी के लिए भी जाना जाता था। और फिर, इसके लिए इसकी प्रतिष्ठा थी।

तो, पहली सदी में रहने वाले पाठकों के लिए, वे क्या सोचेंगे? उस पृष्ठभूमि के प्रकाश में, जब वे गर्म, ठंडा और गुनगुना सुनेंगे तो वे क्या सोचेंगे? मैं आश्चर्य हूँ कि यह इस जैसा दिखता था। गर्म और ठंडा दोनों सकारात्मक चीजें हैं। मूल रूप से, यीशु, जॉन के माध्यम से, चर्च से कह रहे हैं कि आप न तो गर्म हैं और न ही ठंडे।

वह कह रहा है कि आप हिएरापोलिस के पानी की तरह नहीं हैं, गर्म पानी जो उपचार के लिए मूल्यवान है और जिसका औषधीय महत्व है। और न ही आप कुलुस्से के ठंडे, ताज़ा, शुद्ध पानी की तरह हैं। इसके बजाय, आप अपने ही पानी की तरह हैं जो गुनगुना है।

यानी आप घृणित हैं। इसलिए गुनगुना गर्म और ठंडे के बीच में नहीं है। गर्म और ठंडा दोनों सकारात्मक रूपक हैं।

और गुनगुना इसके ठीक विपरीत है। यह नकारात्मक है। इसलिए इसे ईसा मसीह के लिए आग में गर्म होने, उसके विरुद्ध ठंडी होने और बीच में गुनगुनी होने के हमारे अनुभव के आलोक में न पढ़ें।

नहीं, इस संदर्भ में गर्म और ठंडा अच्छी चीजें हैं, और गुनगुना बुरी चीज है। यह बिल्कुल विपरीत है। हमारे आधुनिक समय में एक बेहतर सादृश्य यह होगा कि आध्यात्मिक तापमान की कल्पना का उपयोग करने के बजाय, कम से कम जब आप स्नान करते हैं या, दोस्तों, जब आप शेव करते हैं, तो आप गर्म पानी का उपयोग करना पसंद करते हैं।

जब तक आप कसरत नहीं कर रहे हों, कोई भी इसे पसंद नहीं करता और कभी-कभी थोड़ा ठंडा पानी पीना भी अच्छा लगता है। लेकिन आम तौर पर, हमें गर्म पानी पसंद है। या फिर जब आप कॉफी या चाय पीने बैठते हैं तो किसी को भी गुनगुनी चाय या पानी या कॉफी पसंद नहीं आती।

तुम्हें यह गर्म पसंद है। हो सकता है आपमें से कुछ लोग ऐसा करते हों। या जब आपके पास पानी होता है तो वेट्रेस मेज़ पर आकर पानी क्यों भरती रहती है? क्योंकि किसी को भी वहां पड़ा हुआ बासी पानी पसंद नहीं आता।

उन्हें यह ताज़ा पसंद है। और यही यहाँ की कल्पना है। गर्म और ठंडा दोनों अच्छी चीजें हैं।

और यीशु उनसे कह रहे हैं, काश तुम हिएरापोलिस या कुलुस्से की जल आपूर्ति की तरह होते। वे अच्छे, वांछनीय और मूल्यवान हैं। लेकिन इसके बजाय, आप अपनी खुद की पानी की आपूर्ति की तरह हैं, जो गुनगुना है, वह पानी जो पाइप से आता है, जो बिल्कुल बेकार है।

तो, ये ईसाई नहीं हैं, लॉडिसियन चर्च इच्छाधारी या बाड़ पर सवार नहीं है। वे लगभग उतनी ही दूर जा चुके हैं जितना आप पा सकते हैं। वे अभिनय कर रहे हैं, और यीशु, एक बार फिर, उनसे बहुत परेशान हैं।

वह कहता है कि मैं तुम्हें थूकने वाला हूँ, तुम्हें अपने मुँह से उगल दूंगा। तुम बेकार हो. आप किसी भी चीज़ के लिए अच्छे नहीं हैं।

तो, क्षमा करें, किसी पाठ की पृष्ठभूमि और संस्कृति के बारे में थोड़ी सी समझ अक्सर हमारे पढ़ने के तरीके पर गहरा प्रभाव डाल सकती है और अंत में, हमें एक ऐसे तरीके से समझने में मदद कर सकती है जो हमारे तरीके से बहुत अलग है। यदि हम इसे अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मूल्यों के आलोक में पढ़ें तो शायद इसे समझ सकें। इनमें से किसी भी पाठ पर कोई प्रश्न? क्या हर कोई उसे देखता है? और मैं आपसे यह नहीं कह रहा हूँ कि मैंने जो किया है उससे सहमत हों। मैं बस यह सुझाव दे रहा हूँ कि इस पाठ को प्रकाश में पढ़ने का एक अलग तरीका है जो संभवतः अधिक सुसंगत है, फिर से, यदि आप लॉडिसिया में रहने वाले पहली शताब्दी के ईसाई हैं, तो ये छवियां तुरंत आपके लिए प्रासंगिक होंगी।

आपको अपनी जल आपूर्ति याद होगी, लेकिन आसपास के शहरों की जल आपूर्ति आपकी अपनी निम्न जल आपूर्ति के विपरीत बहुत अच्छी थी। इसलिए उम्मीद है कि जैसे ही हम नए नियम को देखते हैं, जैसे ही हम अलग-अलग नए नियम की पुस्तकों को देखना शुरू करते हैं, हम कुछ अन्य उदाहरण देखेंगे कि ऐतिहासिक, धार्मिक और राजनीतिक रूप से पृष्ठभूमि का पुनर्निर्माण कितनी बार हमें स्पष्ट समझ बनाने में सहायता कर सकता है पाठ का और फिर उसे आज परमेश्वर के लोगों पर कैसे लागू किया जा सकता है। एक अन्य चीज़ जिसके बारे में मैं बात करना चाहता हूँ, मैं एक अन्य पाठ पर संक्षेप में नज़र डालना चाहता हूँ।

दरअसल, मुझे लगता है कि मैं अब ऐसा करूंगा क्योंकि यह इसके साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है, और वह है अपने नोट्स में अगले भाग को छोड़ देना। हम उस सोमवार पर वापस आएंगे, लेकिन मैं क्रिसमस की कहानी, क्रिसमस की कहानी पर दोबारा गौर के बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ। तो, आइए क्रिसमस की कहानी पर दोबारा गौर करें, और फिर से, मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें कि जब हम क्रिसमस की कहानी के बारे में सोचते हैं तो कितनी बार कुछ कमियों को भरने की जरूरत होती है, हम अक्सर अपनी पृष्ठभूमि से चीजों को भरते हैं, हमारी अपनी समझ, यहां तक कि हमारी अपनी परंपराएं और पालन-पोषण और जिस तरह से हमें इसे पढ़ना सिखाया गया है।

तो, क्रिसमस की कहानी दोबारा बताई गई है। यहाँ निस्संदेह एक अच्छी तस्वीर है कि पहली शताब्दी में जब यीशु का जन्म हुआ था तब यह कैसा दिखता था। सिवाय इसके कि वे वास्तविक आकृतियाँ होतीं, लेकिन वहाँ यीशु हैं, और आरामदायक सेटिंग और सभी घास पर ध्यान दें, और ध्यान दें कि यह कितना हल्का है, और वहाँ चरवाहे अपने जानवरों के साथ हैं, वहाँ तीन बुद्धिमान पुरुष हैं, और यहाँ तक कि एक देवदूत भी है उसकी उपस्थिति के साथ चरनी का दृश्य।

और इसलिए, लोकप्रिय उपभोग के लिए चरनी दृश्य को अच्छी तरह से साफ किया गया है, और यह वह तस्वीर है जिसे हम अक्सर अपने दिमाग में रखते हैं, और यह वह तस्वीर है जिसे हम ल्यूक 2 और मैथ्यू 2 को पढ़ने और व्याख्या करने के लिए उपयोग करते हैं, जहां हमें इसका रिकॉर्ड मिलता है क्रिसमस कहानी. अब, मैं जो करना चाहता हूँ वह वापस जाना है और क्रिसमस की कहानी को देखना है और सवाल पूछने की कोशिश करना है कि हमने किस तरह से अपनी

परंपरा, अपनी धारणाओं से चीजों के साथ विवरण भरा होगा, जिस तरह से हमने किया है कहानी पढ़ना सिखाया गया है, और शायद इसे थोड़ा अलग ढंग से देखने की कोशिश करें और पूछें कि पहली सदी के पाठकों को यह कैसी दिखती होगी? उन्होंने इसे कैसे सुना और पढ़ा होगा? हम क्या मान रहे होंगे? तो, आइए वापस जाएं और पाठ को देखें। फिर, वे दो स्थान जहां यीशु के जन्म का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, एकमात्र अन्य स्थान जहां यीशु के जन्म का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है, मुझे लगता है कि रोमियों 1 में एक संदर्भ है, गलातियों के अनुसार यीशु के एक महिला से पैदा होने का संदर्भ है, वहां है प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में एक संदर्भ।

क्रिसमस के समय कोई भी इसे नहीं पढ़ता है, लेकिन प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में यीशु के जन्म का संदर्भ है। लेकिन इसके अलावा, मुझे खेद है, आप बता सकते हैं कि मेरा दिमाग कहाँ है। मैथ्यू अध्याय 2 और ल्यूक 2 यीशु मसीह के जन्म और उनके आसपास की घटनाओं का सबसे विस्तृत विवरण हैं, जिनमें से प्रत्येक पुस्तक का अध्याय 1 भी शामिल है।

लेकिन आइए वापस जाएं और उन पर नजर डालें। मैं चरनी दृश्य के इस सामान्य चित्रण की कई विशेषताओं को देखना चाहता हूँ और कैसे हमने विवरणों को इस तरह से भरा होगा जो जरूरी नहीं कि यह दर्शाता हो कि पहली सदी के पाठकों ने इसे कैसे समझा होगा या वास्तव में क्या हुआ होगा। तो, क्रिसमस की कहानी दोबारा बताई गई, मेरे ख्याल से उस तस्वीर में तीन बुद्धिमान व्यक्तियों की उपस्थिति को अनदेखा करना सबसे आसान था।

और मुझे लगता है कि आपमें से ज्यादातर लोगों को उम्मीद है कि अब तक दो बातें समझ में आ गई होंगी। नंबर एक, जब यीशु का जन्म हुआ तो चरनी स्थल पर कोई बुद्धिमान व्यक्ति मौजूद नहीं था। मैथ्यू अध्याय 2 हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि बुद्धिमान लोग यीशु के घर आए थे।

तथ्य यह है कि हेरोदेस ने दो वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों को मार डाला था, जिससे पता चलता है कि जब बुद्धिमान लोग, जो वास्तव में विदेशी ज्योतिषी थे, यीशु से मिलने आये थे, तब यीशु संभवतः एक से दो वर्ष के बीच के थे। दूसरी बात यह है कि कितने थे इसका कोई जिक्र ही नहीं है। केवल यह उल्लेख है कि वे तीन उपहार, सोना, लोबान और लोहबान लाए थे।

और जब हम मैथ्यू के पास पहुंचेंगे, तो मैं यह पता लगाऊंगा कि वे तीन उपहार क्यों हैं और वे महत्वपूर्ण क्यों हैं। लेकिन संभवतः तीन से अधिक बुद्धिमान व्यक्ति यीशु से मिलने आए थे। लेकिन जाहिर है, फिर से, उम्मीद है, अब तक आप जानते होंगे, वे चरनी में नहीं आए थे।

वे एक या दो साल बाद बेथलहम में यीशु के घर आये। और मैथ्यू हमें बताता है कि वह एक शिशु था, एक बच्चा, बच्चा नहीं, जैसा कि ल्यूक करता है। तो, नंबर एक, कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं थे।

वैसे भी शायद उनमें से तीन नहीं थे, लेकिन वे चरनी स्थल पर नहीं दिखे। सितारा उनके घर पर रुका। नहीं, यह होता। दोबारा, मैं वास्तव में इसके बारे में और अधिक बात करना चाहता हूँ जब हम मैथ्यू 2 पर पहुंचते हैं, लेकिन यह शायद इस तथ्य से जुड़ा है कि वे ज्योतिषी हैं और अन्य चीजें भी चल रही हैं।

तारे के उल्लेख के साथ और भी बातें चल रही हैं, लेकिन जब हम मैथ्यू के बारे में बात करेंगे तो मैं उस बारे में और अधिक बात करना चाहता हूँ। हम मैथ्यू 2 पर थोड़ा समय बिताएंगे और यीशु की कहानी में क्या चल रहा है, उसका जन्म, बेथलहम में उसका रहना, मिस्र जाना और वापस आना। उस पाठ में पुराने नियम की कई बातें चल रही हैं जिनका हम पता लगाएंगे।

और हेरोदेस? मेरा मतलब है, मुझे नहीं लगता कि कोई रिश्ता है। फिर, जब हम मैथ्यू 2 पर पहुंचेंगे तो हम उस पर गौर करेंगे, लेकिन वे बस यह पता लगाने के लिए सबसे प्राकृतिक जगह पर जाते हैं कि अधिक जानकारी कहां से प्राप्त करें और इस मसीहा का जन्म कहां होगा। मुझे बस कुछ अन्य पर नजर डालने दीजिए।

हम इसे खत्म नहीं करेंगे, लेकिन यह एक और आसान मामला है, मुझे लगता है, एक सराय और एक सराय का मालिक। हमारे अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद कहते हैं कि जीसस, मैरी और जोसेफ, बेथलहम गए और उन्होंने जीसस को एक चरनी में रखा क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी। अक्सर हमने यीशु की इस कहानी का निर्माण किया है, जिसमें मैरी और जोसेफ एक सराय में जा रहे थे और उन्हें वहां से हटा दिया गया क्योंकि कोई रिक्ति का संकेत नहीं था और सराय का मालिक उन्हें एकमात्र स्थान पर भेज देता है।

मैंने वास्तव में एक उपदेश सुना था। मैंने इसे पढ़ा। मैंने वास्तव में इसे नहीं सुना।

मैंने एक बार एक उपदेश पढ़ा था जो कि सराय के मालिक द्वारा यीशु को दूर करने के विचार पर आधारित था। और विचार यह था कि क्या हम यीशु को भी दूर कर देंगे? हालाँकि, सबसे पहले, सबसे आसान बात यह है कि ल्यूक 2 में किसी सराय के मालिक का कोई उल्लेख नहीं है। दूसरा वह शब्द है जिसका अनुवाद ग्रीक शब्द में किया गया है, और वास्तव में पिछले वर्ष के भीतर दो अनुवाद किए गए हैं जो अंततः तैयार किए गए हैं इसे बदल दिया। वह शब्द, वह ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद किया गया है वह वास्तव में एक अतिथि कक्ष है।

तो, जहाँ मरियम और जोसेफ गए थे वह कोई सराय नहीं था। सबसे अधिक संभावना यह है कि बेथलहम जैसे महत्वहीन आकार के शहर में कोई सराय भी नहीं रही होगी। मुझे यकीन नहीं है, लेकिन मैरी और जोसेफ किसी सराय या मोटल में नहीं गए थे।

वे संभवतः किसी रिश्तेदार के घर के अतिथि कक्ष में गये। और इसलिए, कोई सराय का मालिक नहीं है और कोई सराय नहीं है। पुनः, उस शब्द का उपयोग ल्यूक में कहीं और स्पष्ट रूप से अतिथि कक्ष को संदर्भित करने के लिए किया गया है, न कि किसी सराय के लिए।

इसलिए, वे शायद किसी रिश्तेदार के घर जाते हैं और उनके पास एक अतिथि कक्ष या गेस्ट हाउस है जहां मैरी और जोसेफ को रहना है। एक और बात, मैरी को बच्चा कब हुआ? फिर, यह बल्कि महत्वहीन है, लेकिन हम मैरी के बारे में नौ महीने के रूप में सोचते हैं जब वह यरूशलेम में गधे पर सवार हुई और फिर उसी रात यीशु बाहर आए। हो सकता है कि ऐसा नहीं हुआ हो।

लेखक हमें यह नहीं बताता कि यीशु के जन्म से पहले वे वास्तव में कितने समय तक बेथलहम में थे। इस बात का विशेष रूप से कोई संकेत नहीं है कि शायद उस रात उनके पास यीशु थे, या यह

एक या दो महीने या उससे अधिक बाद था? यह भी संभव है. पाठ हमें यह नहीं बताता कि मैरी के बच्चा होने से पहले वे कितने समय तक बेथलेहम में थे।

एक और दिलचस्प बात यह है कि सराय में नहीं बल्कि अतिथि कक्ष में कोई जगह नहीं थी। दिलचस्प बात यह भी है कि यह हमें नहीं बताता है, पाठ यह नहीं बताता है कि मैरी और जोसेफ कभी भी अतिथि कक्ष में नहीं रुके थे। वास्तव में, मैरी और जोसेफ बहुत अच्छे से अतिथि कक्ष में रह सकते थे।

समस्या यह थी कि वहाँ अन्य लोग भी रहे होंगे। और शायद वे तब तक वहीं रुके रहे जब तक बच्चे के जन्म का समय नहीं हो गया। और मैरी, जब आसपास इतने सारे लोग हों तो कौन बच्चा पैदा करना चाहेगा? अतिथि कक्ष में बहुत भीड़ थी।

कोई जगह नहीं थी. इसलिए, हमें मैरी और जोसेफ के पूरे समय अस्तबल में चरनी में रहने के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। हो सकता है कि वे इस अतिथि कक्ष में रुके हों और फिर जैसे-जैसे संकुचन करीब आते गए और उसे पता चला कि उसे बच्चा होने वाला है , वहां बहुत भीड़ हो गई थी।

और फिर वे इस चरनी के पास गए, यह एकमात्र निजी स्थान था जो उन्हें मिल सका। इसलिए फिर से, पाठ को ध्यान से सुनें और इसमें जो कहा गया है उससे आगे न बढ़ें, लेकिन सुनिश्चित करें कि हम इसे केवल अपनी मान्यताओं और परंपराओं के प्रकाश में नहीं पढ़ रहे हैं।

यह यहूदी धर्म और सामाजिक मूल्यों पर डॉ. डेविड मैथ्यूसन के न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर में व्याख्यान 4 है।